3

कह दो एक कहानी

लता पाण्डे*

कहानी सुनना लगभग हर बच्चे को अच्छा लगता है क्योंकि कहानी सुनने के दौरान उसे आनंद मिलता है। कहानी सुनने से उसमें अनेक क्षमताएँ भी विकसित होती हैं। इसलिए कहानी को स्कूली दिनचर्या का एक अभिन्न अंग बनाना हितकर है। बच्चे को कहानी कितनी सरस लगती है, वह कितने ध्यान और धैर्य के साथ सुनता है–यह काफ़ी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि टीचर ने कहानी कैसे सुनायी। इसलिए प्रत्येक शिक्षक के लिए कहानी सुनाने से जुड़ी कई बातों को जानना ज़रूरी है, जैसे–कहानी क्या है? कहानी सुनाने से क्या फायदे हैं? कहानी कैसे सुनायी जाए। इन्हीं सब बातों को उजागर कर रहा है यह लेख–कह दो एक कहानी।

नन्हे बच्चों की दुनिया बड़ी ही निराली होती है। इस अनूठी दुनिया में कहीं खेल हैं, तो कहीं झूले हैं। कहीं दादा–दादी, नाना–नानी का लाड़–दुलार है तो कहीं माता–पिता का प्यार। कहीं रूठना है तो कहीं मचलना है। अपने नन्हे बच्चे को मनाने के लिए माँ क्या कुछ नहीं करती? कभी चंदा मामा दिखाती है, तो कभी मीठी लोरी सुनाती है। लोरी की मीठी धुन में खोकर बच्चा मीठी नींद में सो जाता है। बच्चा थोड़ा बड़ा होता है तो लोरी से उसका नाता छूटने लगता है और धीरे–धीरे कहानी उसके जीवन में कदम रखने लगती है। नन्हे–मुन्नों को खेलना–कूदना जितना अच्छा लगता है, उतना ही अच्छा उन्हें कहानी सुनना भी लगता है। एक बार कहानी सुनने का चस्का लग जाए तो बच्चे घर के बड़ों से कहानी सुनाने की ज़िद करने लगते हैं। कहानी बच्चों को आनंदित करती है। कहानी सुनते समय बच्चे कल्पना–लोक की सैर करते है। जिस कल्पना–लोक में आइसक्रीम के पहाड़ हैं, चॉकलेट की नदियाँ हैं, पेड़ों की डालियों में टॉफियाँ लटकी हैं। कहानी के नन्हे पात्रों में बच्चे अपनी ही झलक पाते हैं। यही कारण है कि उनका मन बार–बार कहानी सुनने को करता है।

कहानी की परंपरा

कहानी कहने–सुनने की परंपरा बहुत लंबे समय से चली आ रही है। यह परंपरा विकसित तथा

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली– 110016

अविकसित दोनों ही तरह के समाजो में चली आ रही है। शायद ही कोई देश होगा, जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ आनंद प्राप्ति के लिए कहानियाँ न कही जाती हों, न पढ़ी जाती हों। हर शाम खाना खा लेने के पश्चात् बालकों के झुंड कहानी सुनाने के लिए घर के बड़े-बूढ़ों को घेर लेते हैं- यह परंपरा धरती पर विकसित समाजों में भी देखने में आती है और अविकसित अथवा जंगली लोगों में भी। देश-परदेश में घूमने वाले मुसाफ़िर किसी रात किसी धर्मशाला में रुकते हैं तो अन्य देशों के मुसाफ़िरों के साथ बैठकर नयी-नयी कहानियाँ कहते-सुनते हैं और दिन भर की थकान उतारते हैं। युद्ध के ज़ख्मों को वीरता से झेल लेने वाले सिपाही दवा की शीशियों से भी अधिक महत्त्व कहानियाँ सुनाने वाली नर्स को देते हैं। जेल में बंदी कैदियों को भी अगर मौका मिल जाता है तो वे कहानियाँ कहने का प्रसंग ज़रूर ढूँढ़ लेते हैं। लंबी समुद्री यात्राओं में कहानियाँ ही रात के समय एकमात्र विनोद का माध्यम बनती हैं। राजा और रानी तो हमेशा सोने से पहले कही जाने वाली कहानियों अथवा लोककथाओं में हमसे बार-बार बात करते हैं। कहानी की यही तो खासियत है कि इसमें सभी आनंद लेते हैं।

काका कालेलकर ने थोड़े-से शब्दों में कहानी की महिमा का सुंदरता से यों वर्णन किया है - ''उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक के सभी देशों में, विशाल जनपदों अथवा नन्हें टापुओं में, विकसित लोगों अथवा जंगली निवासियों में, बूढ़ों और बच्चों में, गृहस्थियों अथवा संन्यासियों में यदि कोई सर्वसामान्य व्यसन देखा जा सकता है तो वह है कहानी का व्यसन। संसार में शायद ही कोई गाँव होगा जहाँ शाम पड़ी हो और कहानियाँ न चलती हों। जहाँ-जहाँ व्यापार के पुराने अड्डे थे, वहाँ-वहाँ दूर देशांतरों के व्यापारी सरायों में इकट्ठे होते थे और फिर चातुरी, ठगबाजी, आशिक-माशूक, कुत्ते-बिल्ली, राजा-रानी, साधु-संतों, दैवी-क्षोभ अथवा दैवी-चमत्कारों, तंत्र-मंत्र या जादू-टोनों की कहानियाँ ही चलती थीं।''

इस प्रकार कहानी सभी को आनंदित करती है। कहानी केवल आनंद ही नहीं देती, कहानी सुनने से अन्य भी कई लाभ हैं -

- **आनंद मिलता है** - बच्चे कहानी सुनना इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि कहानी सुनने में उन्हें आनंद मिलता है। अन्य कलाओं की तरह कहानी भी एक कला है। जिस प्रकार कोई भी कला अपने संपर्क में आने वाले व्यक्ति को आनंदित करती है, उसी प्रकार कहानी भी सुनने वाले को आनंद रस से सराबोर कर देती है। संगीत ध्वनि-प्रधान कला है, चित्र रूप-प्रधान कला है, साहित्य काव्य-प्रधान कला है, कहानी रस का भंडार है। कहानी के कथानक के उतार-चढ़ाव में कभी बच्चों को हँसी आती है तो कभी किसी पात्र का विलाप नन्हे बच्चों की आँखों में पानी भर लाता है। रस की उत्पत्ति कहानी सुनाने वाले और सुनने वाले के आपसी तालमेल से होती है जो कहानी सुनने-सुनाने के दौरान होता है।

- **सुनने की क्षमता का विकास होता है**- कहानी सुनते समय बच्चे कहानी में इतना रम जाते हैं कि उन्हें अपने आस-पास की दुनिया की खबर ही नहीं रहती। बच्चे बहुत ध्यान से और धैर्यपूर्वक कहानी सुनते हैं। श्रवण-कौशल के विकास के लिए इसी प्रकार ध्यान और धैर्य के साथ सुनना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार कहानी सुनना बच्चे में सुनने की क्षमता के विकास में सहायक है।
- **बच्चे अनुमान लगाना सीखते हैं** - अकसर कहानी सुनाने की ज़िद करते समय बच्चे कहते हैं-'कल जो बिल्ली की कहानी सुनाई थी, वही सुनाओ' या 'काले जादूगर की कहानी सुनाओ' यानि कि पहले दिन सुनी हुई कहानी बच्चे फिर से दोबारा सुनना चाहते हैं। सुनी हुई कहानी को सुनने में भी उन्हें बहुत आनंद आता है। इसका कारण यह है कि सुनी हुई कहानी को दोबारा सुनते समय वे साथ-साथ यह भी अनुमान लगाते चलते हैं कि अब आगे क्या होगा? जब कहानी सुनते-सुनते लगाया गया अनुमान भी सही साबित होता चलता है तो बच्चे की खुशी का पारावार नहीं रहता। वह आत्मविश्वास से भर उठता है कि - हाँ, मेरा लगाया गया अंदाज़ा बिल्कुल सही निकला। बच्चे का अपने अनुमान लगाने की क्षमता में विश्वास भी बढ़ जाता है और यही विश्वास जब वह पढ़ना सीखने की शुरुआत करता है, तब उसके बहुत काम आता है। अनुमान लगाते हुए पढ़ना उसके लिए पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को सरल बना देता है। छोटी उम्र के बच्चों के लिए इस क्षमता का विकास बहुत ज़रूरी है।
- **बच्चे स्वयं कहानी चुन सकते हैं** - पढ़ने की अपेक्षा कहानी सुनते समय बच्चे के पास स्वतंत्रता होती है कि वह सुनाने वाले से अपनी पसंद की कहानी सुनाने की फरमाइश करें क्योंकि कहानी सुनाने वाला और श्रोता दोनों आमने-सामने होते हैं।
- **आत्मीय संबंध स्थापित होता है** - नन्हे बच्चों को कहानी परिवार का कोई न कोई निकटतम संबंधी सुनाता है। बच्चा अनौपचारिक वातावरण में कहानी सुनता है। कहानी की भाषा भी बच्चे की अपनी भाषा होती है। इस प्रकार बच्चा बहुत ही सहजता से कहानी सुनता है। कहानी सुनाने वाले से बच्चे का संबंध होने के कारण सुनी गई कहानी पर बच्चा आसानी से विश्वास कर लेता है। कहानी सुनते-सुनते बच्चे का कहानी सुनाने वाले से एक आत्मीय रिश्ता बन जाता है। फिर कहानी सुनाने वाला चाहे शिक्षक हो या परिवार का कोई सदस्य।
- **दो कला-विधाओं का समन्वय रहता है**- कहानी सुनते समय बच्चा कहानी के कथानक से रू-ब-रू होने के साथ

कथावाचक के स्वर के उतार-चढ़ाव का भी आनंद लेता है। इस प्रकार सुनी हुई कहानी में दो कला-विधाओं का समन्वय रहता है-पहला साहित्य और दूसरा नाद एवं स्वर।

- **कल्पनाशक्ति का विकास होता है**- कहानी सुनने की विशेषता यह है कि कहानी बच्चों को कल्पना लोक की सैर पर ले जाती है। कल्पना यथार्थ का विस्तार है। प्रत्येक कल्पना वास्तविकता के मूल में निहित रहती है। कल्पनाशक्ति के विकास में कहानी बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। कहानी में कभी नितांत कल्पित घटनाएँ होती हैं, तो कभी वास्तविक जीवन की घटनाओं को कल्पना के ताने-बाने में पिरोकर कहानी बुन दी जाती है। यही कहानी में निहित कल्पना-तत्व है। इस प्रकार कहानी स्वयं कल्पना का प्रतिफल होती है। कहानी का विन्यास कल्पना का ही परिणाम है, भले ही वह वास्तविकता से युक्त हो।
- **भाषायी विकास में सहायक है** - कहानी सुनाने के दौरान बच्चा कहानी में आए शब्दों, वाक्य प्रयोगों और तुकबंदियों को अत्यंत सरलता और सहजतापूर्वक सीख लेता है। ये सब उसकी शब्दावली में कब आ जाते हैं उसे स्वयं ही पता नहीं चलता। इतना ही नहीं बच्चे कई बार कहानी सुनते-सुनते कहानी गढ़ना भी सीख जाते हैं।
- **स्मरण-शक्ति का विकास होता है** - जिस प्रकार कहानी सुनने से बच्चे की कल्पना-शक्ति का भी विकास होता है, उसी प्रकार उसकी स्मरण-शक्ति का भी विकास होता है। बच्चा सुनी हुई कहानी को अपने साथियों/परिवार वालों को सुनाना चाहता है। सुनी हुई कहानी को दोबारा सुनते समय वह अनुमान लगाने की कोशिश करता है कि आगे क्या होगा? इस प्रकार कहानी को याद रखने की कोशिश उसकी स्मरण-शक्ति को बल देती है। जब बच्चा कहानी को याद रखने का प्रयास करता है तो एक वस्तु से जुड़ी दूसरी वस्तु, एक पात्र के साथ जुड़ा दूसरा पात्र, एक घटना से जुड़ी दूसरी घटना सबको मिलाता हुआ चलता है। विचार संचालित करने की शक्ति स्मरण-शक्ति के विकास में सहायक होती है। कहानी की बनावट ही ऐसी होती है कि उसमें विचार संकलन अत्यंत सरल और सहज होता है। संबद्ध और यथार्थ बातें सुनने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है। कहानी में संबद्धता और यथार्थता दोनों ही विद्यमान रहते हैं।
- **स्वयं कहानी बनाने/कहने की कला आती है** - कहानी सुनते-सुनते बच्चे स्वयं भी बातों को किस प्रकार क्रम से रखा जाता है, किस प्रकार कहा जाता है, यह सीख जाते हैं। कई बार बच्चे अपने अनुभव के आधार पर बातों में कल्पना

का पुट देकर मनगढ़ंत किस्से सुनाते हैं। इन्हीं किस्सों को रोचक बनाकर कहानी का रूप देने की कला कहानी सुनने से विकसित होती है।

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट है कि कहानी आनंद देने के साथ बच्चे के लिए कई अन्य प्रकार से भी उपयोगी है। इसलिए कहानी को विद्यालयी शिक्षा में भी समुचित स्थान देना है। विशेष रूप से शिशु शिक्षा का तो कहानी महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए।

शिशु शिक्षा और कहानी

नन्हे बच्चों को स्कूल में रोज़ एक कहानी सुनने को मिले तो सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि शिक्षिका से उनका स्नेहिल नाता बनेगा। वे बिना किसी संकोच के उनसे अपनी बात कह सकेंगे। बच्चों का भाषायी विकास होगा साथ ही कहानी के माध्यम से खेल ही खेल में वे भाषा के साथ गणित भी सीख लेंगे।

कैसे कहें कहानी

कहानी सुनाना भी एक कला है। कितनी ही अच्छी कहानी क्यों न हो यदि रोचक ढंग से न सुनायी जाए तो कहानी अपना दम तोड़ देती है। कहानी सुनाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है –

- कहानी ऐसी चुनें जो रोचक हो जिसकी भाषा बच्चों की अपनी भाषा हो।
- बच्चों को गोल घेरे में बैठाएँ ताकि कहानी सुनते समय हर बच्चा टीचर को देख सके। कहानी सुनाने वाले के चेहरे पर आने वाले उतार-चढ़ाव कहानी का रस लेने में सहायक होते हैं।
- कहानी सुनाते समय स्वर में माधुर्य और आत्मीयता हो। कहानी कहने में गति, स्वर और अधिगम तीनों तत्वों को शामिल करें। हाव-भाव तथा स्वर के उतार-चढ़ाव से कही गई कहानी का असर बहुत गहरा पड़ता है।
- कहानी सुनाते समय कहानी में आए पात्रों के मुखौटे बनाकर बच्चों को पहना दिए जाएँ, तो उनमें कहानी सुनने का आनंद दोगुना हो जाता है।
- बच्चों को तुकबंदी, निरर्थक शब्दों का जोड़-तोड़ बहुत भाता है। कहानी में यदि छोटे-छोटे गीतों को पिरो दें तो कहानी बच्चों के लिए सरस बन जाती है।
- कहानी सुनाने के बाद कभी भी यह न पूछें-इस कहानी से क्या सीख मिली? सीखने-सिखाने पर चर्चा शुरू करते ही कहानी सुनने का सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है।

इन कुछ बातों को दृष्टिगत रखते हुए बच्चों को कहानी सुनायी जाए तो हर बच्चा रोज़ विद्यालय आना चाहेगा। इतना ही नहीं, विद्यालय आने के बाद कहानी सुनने के लिए आतुर बच्चा कह उठेगा-कह दो एक कहानी।

संदर्भ ग्रंथ

बधेका, गिजुभाई, 2000 *कथा-कहानी संस्करण*, संस्कृति साहित्य, शाहदरा, दिल्ली

कुमार कृष्ण, 1996, बच्चे की *भाषा और अध्यापक*, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली

❑❑❑

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAININ

श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली – 110 016

(शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग)

एन.सी.ई.आर.टी. सीनियर रिसर्च एसोसिएटशिप (पूल ऑफिसर) स्कीम

विद्यालय शिक्षा एवं संबंधित विषयों में एन.सी.ई.आर.टी. सीनियर रिसर्च एसोसिएट के पद के लिए भर्ती हेतु आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। पात्रता की योग्यता संबंधित जानकारी हेतु एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाईट www.ncert.nic.in पर देखें। पूर्ण आवेदन अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली - 110 016 को भेजे जा सकते हैं। आवेदनों पर वर्ष में दो बार विचार किया जाएगा (31 मई तथा 30 नवंबर अंतिम तिथियाँ होंगी)।